Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-I JANUARY 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

भाषा संरचना का बदलता परिदृष्य

प्रा.डॉ. विजयसिंह ठाकूर
यशवंत महाविद्यालय, नांदेड.

भाषा वह साधन है, जिके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरोंपर भलीभाँति प्रकट करता है और दूसरों के विचार स्वयं स्पष्ट रूप से समझ सकता है । मनुष्य के कार्य उसके विचारों से उत्पन्न होते हैं और इन कार्यों में दूसरों की सहायता अथवा सम्मति प्राप्त करने के लिए उसे वे विचार दूसरों पर प्रकट करने पडते हैं । इस प्रकार संसार का प्रत्येक व्यवहार बोलचाल अथवा लिखा–पढी से चलता है । अत: भाषा जगत् के व्यवहारकार्य का मूल है । यह सर्व विदित तथ्य है कि कोई भी भाषा अनुसरण से सीखी जाती है । लेकीन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं किं भाषा को सीखने की जरूरत नहीं । इसका मूल कारण यह है कि वातावरण में सीखी गई पारिवारीक भाषा पूर्ण रूप से शुध्द परिमार्जित एवं व्याकरण–सम्मत नहीं होती है । भावाभिव्यक्ति के लिए भाषा को शुध्द व्याकरण–सम्मत व परिमार्जित होना परम आवश्यक है । भाषा की शिक्षा से तात्पर्य है कि उसका मौखिक एवं लिखीत ज्ञान भाषा मनुष्य के लिये एक आवाज ध्वनि संकेत की तरह है । भाषा समाज सापेक्ष है, तथा मानव सापेक्ष भी है । समाज और मानव से विभक्त होकर न इसका कोई महत्व है । नहि अस्तित्व, मानव से कमाई गई एक बहुत ही महत्वपूर्ण सम्पत्ति भाषा है । कई दृष्टिकोण से भाषा का मानक निरूपण किया जा सकता है । समाजशास्त्री भाषा को सामाजिक आदान–प्रदान की भाषा मानते है । भाषा का सांस्कृतिक दृष्टिकोण है । भाषाद्वारा ही एक पीढी अपनी संस्कृति अगली पीढी को संप्रेषित करती चलती है । भौतिक दृष्टिकोण से भाषा स्वर यंत्रों एवं ध्वनि अवयवों के सन्दर्भ में किया जाता है । भाषा एक ध्वनी संकेत है । जिसके द्वारा मानव अपने भावों एवं विचारों का विनिमय करता है । भाषा का लिखित रूप भी होता है । जिसके लिए लिपि है । लिपि ध्वनी प्रतीक चिन्ह है । भाषा का लिखित रूप अधिक प्रामाणिक और करलजई होता है । भाषा सामाजिक मानवद्वारा एक अर्जित उपलब्धि है । यह अर्जित उपलब्धि पीढी दर पीढी संप्रेषित, सवंर्ध्दित और परिष्कृत होती रहती है । एक और भाषा परिवर्तनशील है । भाषा परंपरा से संबंधित है । भाषा का रूप उच्चारित होता है । भाषा विचार अभिव्यक्ति का साधन है । भाषा वातावरणीय होती है । भाषा का व्यावहारिक पक्ष होता है । कई उत्तम भाषा होती है । कई भाषा के उपभाषा होती है, तो कई मूलभाषा तथा विदेशी और आंतरराष्ट्रीय भाषा होती है । हमारी मातृभाषा राष्ट्रीय एकता का पृष्ठपोषक है । व्यक्तित्व के विकास में सहायक है । हमारे आंतरिक गुणवत्ता में मददगार है । मातृभाषा शिक्षाका श्रेष्ठ माध्यम है । विचार संप्रेषण का सरल साधन है । सामाजिक विकास में सहायक है । सांस्कृतिक विकास, मानसिक और बौध्दिक विकास में सहायक है । सृजनात्मक उद्देश्य पूर्ण करता है । साहित्य और सद्प्रवृत्तियों का विकास भाषा से होता है ।

मन की अभिव्यक्ति का सम्मान –

वैश्विक और आर्थिक उदारीकरण के दौर में भाषा की शुध्दता के आग्रही व्यक्तियों के लिये यह खतरे की घण्टी है । हिन्दी तो विश्वभाषा बनने में अग्रेसर है ।

"गुमशुदा की तलाश की तरह जीवन–मूल्यों की तलाश क्यों नहीं होती?
रोकता क्यों नही कोई, चरने वालों की लोक–चित्त की खेती?
कहाँ गया भाषा का सत्य?"

पाणिनि और भर्तृहरि के स्वन प्रक्रियात्मक एवं वाक्यार्थ विश्लेषण भी महत्त्वपूर्ण है । पाणिनि का विश्वप्रसिध्द ग्रन्थ "अष्टाध्यायी" है । आधुनिक भाषा विदोंको भी भाषाविज्ञान में अध्ययन के लिए इसका सहारा लेना पडता है । पाणिनि से लगभग १०० वर्ष पूर्व एक और महत्त्वपूर्ण प्रतिभाशाली वैयाकरण यास्क हुए है, जिन्होंने भाषा सम्बन्धी

अभूतपूर्व कार्य किया है । उनका ग्रन्थ निरूक्त बहुत प्रसिध्द है । अर्थ विचार की दृष्टिसे विश्व का प्रथम ग्रन्थ है । जिसमें अर्थ का प्राचीनम विवेचन मिलता है । पाणिनि के पश्चात् भाषा विवेचन की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण नाम कात्यायन का है । कात्यायन ने अध्ययन के लिए अष्टाध्यायी का अध्ययन तथा उसके कुछ प्रश्नों का समझाना आसान हो जाता है । पतंजलि भाष्य की अनूठी शैली के जन्मदाता प्रसिध्द वैयाकरण पतंजलि का भी भाषाके विवेचन और अध्ययन में महत्त्वपूर्ण योगदान है । इनका प्रसिध्द ग्रन्थ महाभाष्य है की रचना दो उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की गई थी । एक तो कात्यायन द्वारा पाणिनि की आलोचना का समुचित उत्तर देने के लिये तथा दूसरा पाणिनि के उन सूत्रों की व्याख्या करने के लिये जो समय बीत जाने के कारण जटिल हो गए थे । पतंजलि को अपने दोनो उद्देश्यों में सफलता मिली । पंतजलि के पश्चात् पाणिनीय शाखा के अन्य वैयाकरणों नें भी कार्य किया है । इन विद्वानों के दो वर्ग है । १. टीकाकार, २. कौमुदीकर । टीकाकारों में जयादित्य, भर्तृहरि, मम्मट आदि तथा कौमुदीकारों में भट्टोजी दीक्षित, वरदराज आदि प्रमुख है । संस्कृत भाषा के वैरूयाकरणों के बाद पालि भाषा पर भी कार्य करनेवाले वैय्याकरण हुए है । पतंजलि के पश्चात् प्राकृत भाषा पर भी कार्य हुआ । अध्ययन का आधुनिक युग इसमें भारतीय तथा पाश्चात्य दोनों शामील हैं । विशय काड वैल–१८१४–१८९१–द्रविड भाषा का तुलनात्मक अध्ययन । जातबीम्स–भारतीय भाषाओं और विशेष रूप से भारतीय आर्य भाषाओं के अध्ययन में इनका विशेष महत्व आहे । डॉ.ट्रम्प का सिन्धी व्याकरण प्रकाशित हुआ । इसमें संस्कृत, प्राकृत तथा अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं से तुलना की गई है । १८७३ में आपका पश्तो व्याकरण भी प्रकाशित हुआं । पादरी केलाग–आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के विद्वान थे । १८७६ में इनका हिन्दी भाषा व्याकरण प्रकाशित हुआ । अवधी, ब्रजभाषा, बिहारी, राजस्थानी और मध्य पहाडी भाषाओं का भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । डॉ.सर रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर–आधुनिक भाषाकार्य, डॉ.हार्षले आधुनिक आर्यभाषाओं के विद्वान भोजपूरी भाषा के अध्ययन तथा विवेचन, तुलनात्मक व्याकरण का अध्ययन किया । सर जॉर्ज अब्राहम ग्रिर्यसन बिहारी भाषाओं के सात व्याकरण (१८८३–१८८७) तक प्रकाशित हुए । जूल एलाक ने १९०० में मराठी की बनावट प्रसिध्द हुआ । भारतीय आर्यभाषा तथा द्रविड भाषाओं का व्याकरण नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हुआ । डॉ.सुनीतीकुमार चॅटर्जीने बंगला का उद्भव तथा विकास, रेल्फ लिले टर्नर नेपाली भाषाओं के प्रसिध्द विद्वान थे । १९३१ नैपाली कोश प्रसिध्द है । भारतीय आर्य भाषाओं का तुलनात्मक उत्पत्तिकोष प्रसिध्द हुआ । डॉ.बाबुराव सक्सेना, १९३८, अवधीका विकास, डॉ.धीरेन्द्र वर्मा–ब्रजभाषा, फ्रासीसी भाषामें लिखा था । इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा का इतिहास ब्रजभाषा व्याकरण – अन्य विद्वानों में संस्कृत भाषा पर कार्य करनेवाले बी.के.राजवाडे, डॉ.सिध्देश्वर वर्मा, डॉ.भोलाशंकर व्यास, असली, सिध्दी, गुजराती, दरद, द्रविड पर कार्य करनेवालोंमें डॉ.गोपीनाथनन्द, डॉ.भोलानाथ तिवारी जो बिसवी शती हिन्दी भाषाके वैज्ञानिकों में है । डॉ.उदयनारायण तिवारी, डॉ.हरदेवबाहरी, डॉ.रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ. माताबदल जायस्वाल, डॉ.कैलाशचन्द्र मारिया, डॉ.रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, डॉ.देवेन्द्रनाथ शर्मा, डॉ.मोतीलाल गुप्त, डॉ. रामकिशोर शर्मा प्रमुख है । आज मिडीया और जनसंचार की भाषा में हमारी भाषायें बाजारू भाषा बन गयी है । भाषा का मूल संरचना ढॉचा कहॉ गुम हो रहा है? एक और विश्व में हिन्दी भाषा का बढता प्रभाव तो दूसरी ओर देश में अपनी भाषाओं के प्रती उदासीनता क्यों है? भाषायें क्या आत्महत्याएँ कर रही है । या भाषाओं को जानबुझाकर समाप्त किया जा रहा है । भाषा की प्रमाणिकता हर स्तरसे नीचे आ रही है ।

वाक्य विन्यास, शैली, रंग, रूप से ढॉचागत मजबुती की आवश्यकता है । लिपीके माध्यम से देश की लिपी में रूपांतरित होता सामाजिक एकता के ओर देशकी अखंडता की वर्तमान की आवश्यकता है ।

संदर्भसूची –

१. विशय काड वैल, द्रविड भाषा का तुलनात्मक अध्ययन
२. जान बीम्स, भारतीय भाषाओं और विशेष रूप से भारतीय आर्य भाषाओं के अध्ययन
३. डॉ.ट्रम्प, सिन्धी व्याकरण
४. पादरी केलाग, आधुनिक भारतीय आर्य भाषा